# रामायण वार्ता

## देव भाषा संस्कृत का प्रसार

## रामायण वार्ता के विषय में

'रामायण वार्ता','रामायण रिसर्च काउंसिल' का एक प्रकल्प है। "रामायण वार्ता" का उद्देश्य है- देव भाषा संस्कृत का प्रसार करना। इस हेतु हम 'रामायण रिसर्च काउंसिल' के तत्त्वावधान में पंजीकृत पत्रिका 'रामायण वार्ता' का संस्कृत में प्रकाशन एवं प्रसार कर रहे हैं। इसमें साक्षात्कार, रामायण, लोक-कला-संस्कृति साहित्य, मंदिर, ऐतिहासिक धरोहर, विश्व, राष्ट्र-निर्माण, वैदिक ज्ञान से संबंधित कई रोचक विषयों को सरल शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है। इस कार्य में पटना आईआईटी एक नोडल संस्था है जो विश्वभर के अधिकांश सनातनियों के हाथों में इसके डिजिटल प्रारूप को पहुंचाने हेतु तकनीक भी विकसित कर रही है। इस प्रकल्प के अंतर्गत निम्न और कार्य किए जाते हैं।

- संस्कृत भाषा में समाचार एवं संस्कृति पर आधारित वेबसाइट **www.ramayanvarta.com** का संचालन एवं प्रसार।
- Ramayan Varta का यू-ट्यूब चैनल भी हिन्दी-संस्कृत द्वि-भाषा में संचालन, जो साक्षात्कार, संस्कृत व संस्कृति-संबंधी सूचना, ऐतिहासिक धरोहर, लोक-संस्कृति तथा ज्ञानवर्धक विषयों की जानकारी पर आधारित है।
- संस्कृत भाषा के प्रति आमजन में जागरूकता हेतु 60 दिनों का एक कोर्स डिवेलप किया गया है। इसे टेक्स्ट और डिजिटल दोनों प्रारूप में तैयार किया गया है जिसके माध्यम से संस्कृत के प्रसार हेतु वर्क्स-शॉप

## विजन

हम देवभाषा संस्कृत का जन-जन में प्रसार करना चाहते हैं। यही वो तरीका है जिससे हम सनातन के वैभव को सहस्राब्दियों तक सुरक्षित कर सकते हैं। जिस तरह हमारे समाज में अंग्रेजी का चलन बढ़ता जा रहा है, यह हमारे सामने चुनौति है कि कैसे हम संस्कृत सीखने के प्रति लोगों को जागरूक कर सकें। पूरा काउंसिल परिवार किसी भाषा के खिलाफ नहीं है, अंग्रेजी सीखना, या कोई भी भाषा सीखना बुरा नहीं है। जितनी भाषा सीखी जाए, उतना अच्छा है। लेकिन जब हमें कोई भाषा की आड़ में अपनी संबंधित संस्कृति को अपनाने की चाल चले, तो हमें सतर्क हो जाना चाहिए। हमारी मूल भाषा संस्कृत है। उसका अपना वैभव है। अधिकांश भाषाओं की जड़ है संस्कृत। हमें संस्कृत से दूर करने के लिए बड़ी-बड़ी साजिशें की गईं। हमारे विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों को नष्ट किए गए। हमारी शिक्षा-पद्धति पर प्रहार हुआ। हमारे बच्चे आज संस्कृत सीखने के प्रति न इच्छुक होते हैं, न हम उन्हें प्रेरित कर पाते हैं, न हम स्वयं अपनी मनःस्थिति को तैयार कर पाते हैं। ऐसा कैसे हुआ ? यह एक दिन में नहीं हुआ। इसके पीछे लंबे समय से वही लोग साजिशें करते रहे, जो हमारी संस्कृति को छिन्न-भिन्न करना चाहते थे।

रामायण रिसर्च काउंसिल ने कई संतों के मार्गदर्शन में संस्कृत के प्रसार का बीड़ा उठाया है। कई संस्थाएं ऐसा पहले से कर रही हैं। हम सबसे आह्वान करते हैं कि आइए, हम साथ चलें। हमारा लक्ष्य एक है। उद्देश्य एक है। हम मिलकर चलेंगे तो हमारा सनातान, हमारी संस्कृति, हमारी भाषा... सबको हम एकजुट होकर, मजबूती के साथ समृद्ध कर पाएंगे।

## जय सीता राम। जय सनातन।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान पटना
Indian Institute of Technology Patna

प्रो० टी० एन० सिंह | Prof. T. N. Singh
निदेशक | Director

निदेशक कार्यालय
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान पटना
बिहटा, पटना - 801106

Office of the Director
Indian Institute of Technology Patna
Bihta, Patna - 801106

**दिनांक:24.06.2023**

**सहमति पत्र**

**विषयः 'रामायण रिसर्च काउंसिल' के तत्वावधान में संस्कृत भाषा में प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'रामायण वार्ता' (पाक्षिक) के डिजिटल प्रसार हेतु इस कार्य में आईआईटी पटना के एक नोडल-संस्था के रूप में शामिल होने हेतु आग्रह के प्रत्युत्तर सहमति प्रदान करने के संबंध में।**

**सादर प्रणाम।**

**महोदय,**

देवभाषा संस्कृत को जीवंत रखना, हमारी संस्कृति को जीवंत रखने जैसा है और मुझे प्रसन्नता है कि 'रामायण रिसर्च काउंसिल' संस्कृत भाषा में पाक्षिक पत्रिका 'रामायण वार्ता' का प्रकाशन करने जा रही है, जिसमें देश के सांस्कृतिक मूल्यों, ऐतिहासिक धरोहरों, खोती जा रही कला-संस्कृतियों से पूर्ण सामग्री संस्कृत भाषा में प्रकाशित होनी है।

आपकी संस्था (रामायण रिसर्च काउंसिल) ने 'रामायण वार्ता' के 'ई-प्रकाशन' के तकनीकी प्रसार हेतु पटना आईआईटी को एक नोडल-संस्था के रूप में जुड़ने हेतु आग्रह किया है और निवेदन किया है कि पटना आईआईटी, देश के शीर्षस्थ तकनीकी संस्थाओं से 'रामायण वार्ता प्रकाशन समिति' में 'तकनीक सहयोगी संस्था' के रूप में जुड़ने हेतु काउंसिल की ओर से आग्रह करें, ताकि इसका वैश्विक डिजिटल प्रसार वृहद रूप से किया जा सके।

हम काउंसिल के उपरोक्त आग्रह विषय को ध्यान में रखते हुए अपनी सहमति प्रदान कर रहे हैं। हम शीघ्र ही देश की प्रतिष्ठित आईआईटीज़ को इस पुनीत यज्ञ में सहयोगी के रूप में शामिल करने का पूर्ण प्रयत्न करेंगे।

सादर।

(टीएन सिंह)
**निदेशक, आईआईटी पटना**

सेवा में,

**श्री चंद्रशेखर मिश्र जी**, अध्यक्ष, रामायण रिसर्च काउंसिल

**प्रतिलिपिः संयोजक, रामायण रिसर्च काउंसिल**

Phone : Office + 91 6115 233001; 233071 | Fax +91 6115 233111 | E-mail : director@iitp.ac.in

# संस्कृत भाषा को जीवंत रखने की पहल

## रम्या संस्कृतभषियं शुद्धा विज्ञानसभ्यता।
## रुचिरा सरसा चेयं नित्या ज्ञानप्रदा तथा॥

संस्कृत रमणीय विज्ञान संयुत पवित्र, रुचिर, सरस एवं सतत् ज्ञान प्रदान करने वाली भाषा है। यह परिमार्जित है भाषा भारत को जानने व समझने का श्रेष्ठतम माध्यम है। विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में सुप्रतिष्ठित संस्कृत हमारी भौतिक और आध्यात्मिक् उन्नति की भाषा है। संस्कृत को देवभाषा कहते हैं क्योंकि यह दिव्य है, विलक्षण है और विशुद्ध वैज्ञानिक भाषा है।

भारत की प्रतिष्ठा यहां की संस्कृति और संस्कृत से है। अतः कहा जाता है 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृत संस्कृतिस्तथा' - संस्कृत भारत की आत्मा है, अतः भारत के सम्यक् अभियान के लिए सर्वप्रथम संस्कृत का ज्ञान अपेक्षित है।

## चिंतामणि महाराज

अध्यक्ष,'रामायण वार्ता'
(मा. संसद सदस्य, सरगुजा, छत्तीसगढ़)


संस्कृत के प्रचार-प्रसार के दृढ़-प्रतिज्ञ होकर सुपरिणाम प्राप्त करने वाले मेरे पूज्य पिताजी ब्रह्मलीन रामेश्वर गहिरा गुरुजी जिनका आस्थापूर्वक स्मरण 'पूज्य गुरुदेव स्वामी' किया जाता है, के त्याग व तप को सुनने और देखने का सुयोग मेरे जीवन में मुझे मिला।

पूज्य गुरुदेव स्वामी ने वनांचल में संस्कृत भाषा शिक्षा के माध्यम से समाज में जो कार्य किया है, वह अनुकरणीय है। इसका लाभ मुझे भी मिला। मैं प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात संस्कृत पाठशाला का छात्र रहा और विधिवत संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की।

छत्तीसगढ़ में संस्कृत बोर्ड जो सम्प्रति संस्कृत विद्या मण्डलम् के नाम से जाना जाता, के अध्यक्ष पद पर कार्य करने का अवसर प्राप्त कर मन में प्रसन्नता हुई। तब प्रदेश में संस्कृत की पाठशालाएं आज की अपेक्षा कम थी।

राज्य शासन के द्वारा संस्कृत पाठशालाओं के विद्यार्थियों को निःशुल्क पुस्तक, गणवेश, संस्कृत अध्ययन प्रोत्साहन राशि, छात्राओं को साथ सायं काल, मध्याह्न, भोजन देकर, संस्कृत शिक्षा को बढ़ावा दिया जाने लगा जो प्रशंसनीय है।

भारत में संस्कृत भाषा का प्रचार-प्रसार एवं संस्कृत शिक्षा को सुप्रभावी और विस्तार देने के क्षेत्र में कार्य किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

'रामायण रिसर्च काउंसिल' के अंतर्गत 'रामायण वार्ता' प्रकल्प के माध्यम से संस्कृत भाषा को लेकर जो पहल की जा रही है, वह अनुपम है। इस पूरे प्रकल्प 'रामायण वार्ता' की अध्यक्षता करने का जो गौरव मुझे प्राप्त हुआ है, उसके लिए मैं निःशब्द हूं और ईश्वर का हृदय से आभार प्रकट करता हूं। हम इस प्रकल्प के माध्यम से संस्कृत भाषा के शिक्षण-एवं प्रशिक्षण हेतु शीघ्र-अति-शीघ्र 60 दिनों के एक कोर्स को अंतिम स्वरूप देने जा रहे हैं तो वहीं हमने समाचार और संस्कृति पर आधारित संस्कृत भाषा में एक वेबसाइट **www.ramayanvarta.com** को भी जनमानस में प्रस्तुत किया है। हम काउंसिल के तत्त्वावधान में 'रामायण वार्ता' के माध्यम से विश्वव्यापी-स्तर पर कई कार्यशालाओं तथा जनजागरूकतापूर्ण कदम के साथ एक अभियान की कल्पना कर रहे हैं। आप सभी 'रामायण वार्ता' की पहल से जुड़ेंगे तो निस्संदेह संस्कृति और संस्कृत को प्रोत्साहन की दृष्टि से बड़ी कृपा होगी।

# संस्कृत 'म्यूजियम' की वस्तु नहीं, भविष्य की आवश्यकता

**अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।**
**परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।**

**अर्थ:** वेदों और पुराणों का ज्ञान संस्कृत में ही है, जो हमें धर्म और नीति सिखाता है।

**श्रीमहंत डॉ. स्वामी भरत दास जी महाराज**

(उदासीन आश्रम, रानोपाली, अयोध्या, उप्र)
मुख्य संपादक,'रामायण वार्ता'

संस्कृत केवल मंत्रों की भाषा नहीं, बल्कि सभ्यता की कुंजी है। इसके प्रचार-प्रसार की आवश्यकता आज इसलिए नहीं है कि हमें पीछे लौटना है, बल्कि इसलिए है ताकि हम सही दिशा में आगे बढ़कर एक सांस्कृतिक-राष्ट्र का निर्माण कर सकें।

यह सत्य है कि हम अपनी संस्कृति को विदेशी चश्मे से देखते हैं क्योंकि हमने उस भाषा को छोड़ दिया जिसमें वह संस्कृति लिखी गई थी। आज के तनावपूर्ण युग में संस्कृत के मंत्रों का कंपन केवल धार्मिक क्रिया तक ही हम सोचने लगे हैं। ऐसा देखकर लगता है कि हमने अब तक संस्कृत को बिल्कुल भी कभी समझने की कोशिश नहीं की है।

न्यूरोसाइंस स्वीकार कर रहा है कि संस्कृत का उच्चारण 'कॉग्निटिव फंक्शन' को बेहतर बनाता है। आयुर्वेद, खगोल विज्ञान और धातु विज्ञान के हजारों ग्रंथ आज भी अनछुए हैं क्योंकि उन्हें समझने वाले लोग कम हैं। संस्कृत सीखने से ये सारे कार्य आसान हो जाते हैं, इसलिए हमें एक सोची-समझी नीति के तहत संस्कृत की ओर वापस नहीं आने दिया था।

हमारा मानना है कि अब स्कूलों में संस्कृत को कप्यूटर प्रोग्रामिंग के साथ जोड़कर पढ़ाया जाए ताकि बच्चे इसकी तार्किकता देख सकें। हमें संस्कृत में पॉडकास्ट और वेब सीरीज बनाना चाहिए। इसे केवल डिग्री तक सीमित न रखकर, अनुवाद, पांडुलिपि संरक्षण और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में करियर के रूप में विकसित करना होगा।

अच्छा सोचिए, इस एआई युग में दुनिया अब 'कोडिंग' की तरफ बढ़ रही है। संस्कृत दुनिया की इकलौती ऐसी भाषा है जो पूरी तरह तर्क पर आधारित है। यहां हमारे हर प्रश्न का उत्तर है, इसमें कोई 'अपवाद' नहीं है। हम जानें तो। यह आने वाले समय की 'मशीन लैंग्वेज' बन सकती है। अगर हम आज पीछे रहे, तो भविष्य की तकनीक में भी हम दूसरों के पीछे ही रहेंगे।

हमें संस्कृत को मंदिर के कोने से निकालकर ड्राइंग रूम और कैफेटेरिया में लाना होगा। पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियों को आज के एनिमेशन और वेब-सीरीज के रूप में लाना होगा। इसे केवल 'देवताओं की कठिन भाषा' कहना बंद करना होगा। इसे 'दोस्तों की आसान भाषा' बनाएं। यह कैसा होगा, इस पर हम सभी चिंतन करें। जैसे हम 'हिंग्लिश' बोलते हैं, वैसे ही संस्कृत के छोटे-छोटे शब्दों को अपनी रोज़मर्रा की बातचीत में शामिल करें।

हम जान लें, संस्कृत हमारे गौरवशाली अतीत का दर्पण और उज्ज्वल भविष्य की नींव है। इसका प्रचार-प्रसार किसी एक धर्म या जाति के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता के कल्याण और ज्ञान की खोज के लिए अनिवार्य है। ध्यान रखिए, अगर यह भाषा लुप्त होती है, तो हम केवल शब्द नहीं, बल्कि सोचने का एक अनूठा और वैज्ञानिक तरीका खो देंगे, हम अपने सांस्कृतिक वैभव को दिन-प्रतिदिन खोते ही चले जायेंगे।

# संस्कृत मानवता की विरासत और आधुनिक समय की आवश्यकता

## श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी सांदीपेंद्र जी महाराज

मां बगलामुखी मंदिर प्रांगण,
नलखेड़ा, मप्र
अध्यक्ष, रामायण रिसर्च काउंसिल

**यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।**
**एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति।।**

**अर्थ:** जैसे एक पहिये से रथ नहीं चलता, वैसे ही संस्कृत (ज्ञान) के बिना जीवन का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है।

संस्कृत केवल एक भाषा नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, दर्शन और ज्ञान-विज्ञान की संवाहिका है। इसे 'देवभाषा' और 'सभी भाषाओं की जननी' कहा जाता है। वर्तमान युग में, जहाँ हम तकनीकी रूप से आगे बढ़ रहे हैं, संस्कृत के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक हो गई है।

संस्कृत को पुनर्जीवित करने से केवल अतीत को याद रखना नहीं होगा, बल्कि भविष्य को समृद्ध बनाना सिद्ध होगा।

भारत का अधिकांश प्राचीन साहित्य—वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और पुराण—संस्कृत में रचे गए हैं। यदि हम संस्कृत को भूल जाते हैं, तो हम अपनी उस मूल विरासत से कट जाएंगे जिसमें योग, आयुर्वेद और अध्यात्म का अनमोल खजाना छिपा है।

संस्कृत अपनी व्याकरणिक संरचना में अत्यंत सटीक और वैज्ञानिक है। कंप्यूटर विज्ञान के विशेषज्ञों का मानना है कि 'अल्गोरिदम' और 'प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण' के लिए संस्कृत एक आदर्श भाषा है। पाणिनि की अष्टाध्यायी आधुनिक भाषा विज्ञान का आधार स्तंभ है। संस्कृत के उच्चारण से स्वर तंत्र और मस्तिष्क के विशेष केंद्रों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शोध बताते हैं कि संस्कृत के श्लोकों का पाठ करने से एकाग्रता और स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है।

संस्कृत ने 'भारोपीय' (Indo-European) भाषा परिवार के माध्यम से वैश्विक स्तर पर भाषाओं को जोड़ा है। कोई संदेह नहीं कि इसका प्रचार-प्रसार विश्व में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को सुदृढ़ करता है।

इसलिए हमारा मानना है कि संस्कृत को केवल कर्मकांड की भाषा न मानकर बोलचाल की भाषा (संभाषण संस्कृत) के रूप में बढ़ावा देना चाहिए।

रामायण रिसर्च काउंसिल के नेतृत्व में हम सभी संस्कृत के उत्थान एवं संपूर्ण प्रसार हेतु संकल्पित हैं। हम संस्कृत पाक्षिक प्रत्रिका 'रामायण वार्ता' के प्रकाशन के साथ संस्कृत भाषा के लिए कार्य करने वालों को सम्मान भी प्रदान करते हैं। संस्कृत भाषा के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण का कार्यक्रम अलग संचालित है। परंतु यह तब तक संभव नहीं है, जब तक आप सभी साथ नहीं आएंगे, क्योंकि यह किसी संस्था-विशेष का कार्य नहीं, बल्कि इस राष्ट्र का कार्य है। हमारा-आपका सभी का कार्य है।

## संस्कृत भाषा को हमारी आवश्यकता नहीं, हमें संस्कृत की ओर लौटने की आवश्यकता है ?

### संस्कृतं मातृ तुल्यं, केवलं भाषाणां जननी न,
### अपितु संस्काराणां संस्कृतिः अपि जननी।

**अर्थ:** संस्कृत माता के तुल्य है,
यह केवल भाषाओं की जननी नहीं है,
बल्कि संस्कारों और संस्कृति की भी जननी है।

**वैदेहीनंदन पंडित वेदांतजी**

(श्रीजानकी कथा मर्मज्ञ
12 वर्षीय बाल व्यास)
सहयोगी संपादक,'रामायण वार्ता'

संस्कृत देवभाषा है, परंतु इसके प्रति हम कितने उदासीन हो चले हैं। आज मेरी उम्र के बच्चों को संस्कृत की उचित शिक्षा से दूर रख अंग्रेजी सिखाना ट्रेंड हो चला है। अंग्रेजी भाषा या कोई अन्य भाषा सिखना बुरा नहीं है, परंतु हम अपनी ही सांस्कृतिक भाषा को जो हमारी मूल है, उसे ही छोड़कर अंग्रेजी सीखकर पाश्चात्य की ओर चल पड़ने की सोच रखते हैं, यह गलत है। परिणाम है कि आज हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को खोते जा रहे हैं और दूसरों से कह रहे हैं कि हमें हमारा गौरवशाली इतिहास समझा दें।

वैज्ञानिक रिसर्च कहती है कि संस्कृत बोलना दिमाग के लिए किसी वर्कआउट से कम नहीं है। इसके शब्दों का उच्चारण करते समय जीभ और तालु के जिन बिंदुओं का स्पर्श होता है, वह सीधे नर्वस सिस्टम को एक्टिवेट करता है। क्या हम अपने बच्चों को यह 'सुपरपावर' नहीं देना चाहेंगे ? आज आप सभी के समक्ष वैदेहीनंदन वेदांत एक उदाहरण है जिसने अंग्रेजी को भी सीखते हुए संस्कृत भाषा को सीखने तथा पढ़ाई के साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत को भी समझना जीवन का ध्येय बनाया।

कुछ पश्चिमी सभ्यता का प्रसार करने वाले लोग संस्कृत के विरुद्ध भ्रम फैलाते रहे हैं। हमें अपने परिचितों को समझाना होगा कि संस्कृत कोई पुराना खंडहर नहीं है जिसे हम सिर्फ दूर से देखें और गर्व करें। यह वो कुंजी है जिस पर आक्रांताओं की दृष्टि थी और फिर नालंदा में रखे हमारी साहित्यिक विरासतों एवं अथाह ग्रथों के साथ क्या हुआ, यह पूरी दुनिया को मालूम है। हमें हमारे विषय की गंभीरता को समझना होगा और अपने अभिभावकों को समझाना होगा। तकनीकी भाषा में बात करें तो

संस्कृत एक जीता-जागता सॉफ्टवेयर है जिसे अगर हमने समय पर अपडेट कर इस्तेमाल नहीं किया, तो एक दिन यह 'करप्ट' हो जाएगा और हमारे पास पछताने के अलावा कुछ नहीं बचेगा। हम बच्चों को आने वाला भविष्य कहा जाता है, हमारे भविष्य को बचाने में आज के अभिभावकों को मेरे विचार पर चिंतन करना होगा।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का विशेष धन्यवाद जो संस्कृत भाषा के प्रसार हेतु संकल्पित हैं और यह दिखता है। देश के प्रधानमंत्री होकर भी वह प्रतिदिन अपने सोशल मीडिया वॉल्स पर 'सुभाषितम्' साझा करते हैं। हमें सीखना चाहिए और इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

# संस्कृत भूषण सम्मान समारोह -2025

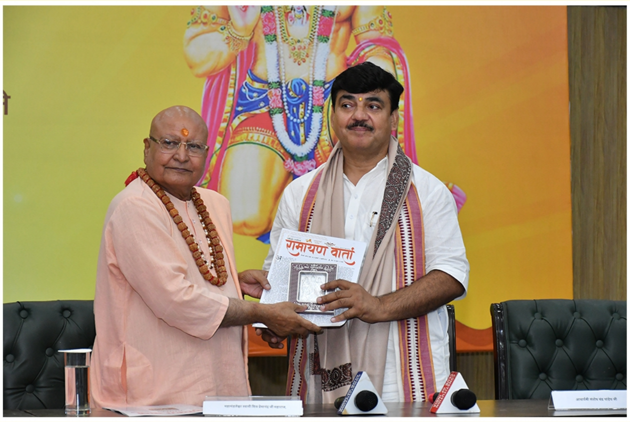

रामायण वार्ता
रामराज्य

रामायण वार्ता

5:30 बजे
रामायण वार्ता
रामराज्य

रामायण वार्ता

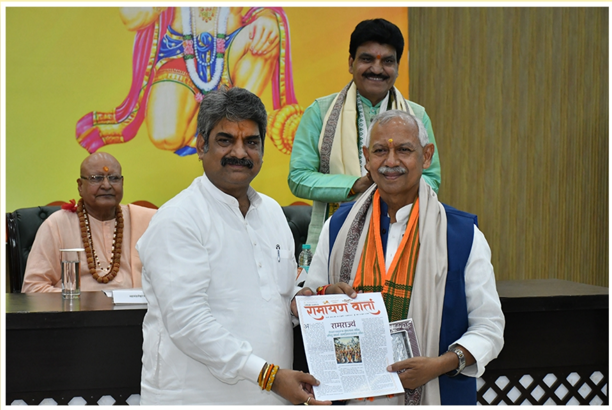
रामायण वार्ता
रामराज्य

constitution
club of india

6 अगस्त 2025
शाम 5:30 बजे

# मीडिया कवरेज

## अमर उजाला

## Sanskrit: संस्कृत भाषा विकास के लिए शिक्षकों को सम्मान, देवभाषा में समाचार पत्र की शुरुआत

डिजिटल ब्यूरो, अमर उजाला, नई दिल्ली Published by: राहुल कुमार Updated Wed, 06 Aug 2025 09:55 PM IST

**सार** 88554 Followers देश

बिहार मां सीता के विशाल मंदिर के निर्माण में जुटी संस्था रामायण रिसर्च काउंसिल ने भी संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए कदम उठाया है। संस्था ने बुधवार को संस्कृत भाषा में एक समाचार पत्र और वेबसाइट की शुरुआत भी की है।

रामायण रिसर्च काउंसिल के संस्कृत भाषा में समाचार पत्र लांच करने के अवसर पर गणमान्य लोग। - फोटो : अमर उजाला

**विस्तार**

केंद्र सरकार और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कई आनुषंगिक संगठन संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार के लिए लगातार काम कर रहे हैं। बिहार मां सीता के विशाल मंदिर के निर्माण में जुटी संस्था रामायण रिसर्च काउंसिल ने भी संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए कदम उठाया है। संस्था ने बुधवार को संस्कृत भाषा में एक समाचार पत्र और वेबसाइट की शुरुआत भी की है। इस अवसर पर संस्कृत भाषा के विकास में जुटे शिक्षकों, सांसदों, विधायकों और अन्य गणमान्य लोगों को सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर काउंसिल के बोर्ड ऑफ ट्रस्टी के अध्यक्ष और उत्तराखण्ड से सांसद अजय भट्ट ने कहा कि देवभाषा संस्कृत को आज के समय में प्रसार करना बेहद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि संस्कृत कई भाषाओं की जननी है, लेकिन इसका प्रयोग अधिक से अधिक करें, इसके लिए शिक्षण एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जिसे लेकर काउंसिल बड़ा अभियान शुरू करने जा रही है। काउंसिल के मुख्य संरक्षक और पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने कहा कि काउंसिल पिछले दो वर्षों से पाक्षिक पत्रिका रामायण वार्ता का प्रकाशन कर रही है, यह अपने आप में प्रशंसनीय है, क्योंकि एक तरफ जहां संस्कृत के पाठकों की कमी है, अधिक विज्ञापन नहीं है, वहां काउंसिल लगातार संस्कृत को लेकर कार्य कर रही है, यह बड़ा साहसिक कार्य है।

रामायण रीसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने अमर उजाला से कहा कि आरआरसी संस्कृत के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए 60 दिनों का एक कोर्स मोड्यूल भी लाने जा रही है। इस अवसर पर मुरली मनोहर पाठक, कुलपति (लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विवि), सौरभ कुमार, प्रॉक्टर (दिल्ली विवि), भारतेंदु पाण्डेय, संस्कृत विभागाध्यक्ष (दिल्ली विवि), प्रो. अशोक दुबे (लखनऊ विश्वविद्यालय) को सम्मानित किया गया। संसद में संस्कृत भाषा में शपथ ग्रहण करने के लिए लता वानखेड़े, रोडमल नागर, महेन्द्र सिंह सोलंकी, श्रीपद येस्सो नाईक (केंद्रीय मंत्री), अरूण गोविल, प्रताप चन्द्र सारंगी, डॉ. महेश शर्मा, हिमांग जोशी, संध्या राय, दिलीप सैकिया, देवू सिंह चौहान, चिन्तामणी महाराज, सुनील दुग्गल (पूर्व सांसद) को सम्मानित किया गया।

**आकर्षण का केंद्र रहे बाल व्यास पंडित वेदांत**

इस अवसर पर 11 वर्षीय वैदेहीनंदन बाल व्यास पंडित वेदांत ने संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में वक्तव्य देकर सभी को चौंका दिया। बाल व्यास वेदांत नई दिल्ली में ही कक्षा छठी के छात्र हैं और हिन्दी, अंग्रेजी के साथ-साथ संस्कृत भाषा पर भी अच्छी पकड़ रखते हैं। वे देशभर में कथावाचन करते हैं और रामायण वार्ता के लिए वह संस्कृत के प्रशिक्षण पर आधारित एक पुस्तक 'देवभाषा संस्कृत सीखें' को भी अंतिम स्वरूप दे रहे हैं। इसके अलावा वह पुस्तक 'वेदांत पुष्प' तथा 'मानस-ज्ञान' भी लिख चुके हैं। वेदांत ने कहा कि वह आज से संस्कृत और संस्कृति का विशेष उल्लेख अपने कथावाचन में करेंगे और छोटे बच्चे एवं अभिभावकों को इसके लिए प्रेरित भी करेंगे।

## New Delhi 08.08.2025

## दैनिक जागरण

## 'संस्कृत को आम जन की भाषा बनाने पर देंगे जोर'

संस्कृत भूषण सम्मान समारोह को संबोधित करते रामायण रिसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत। मंच पर बैठे संत व प्रबुद्धजन •जागरण

**जागरण संवाददाता, नई दिल्ली:** रामायण रिसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने कहा कि काउंसिल संस्कृत को आमजन की भाषा बनाने की ओर प्रयासरत है। इस दिशा में संस्कृत के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए 60 दिनों का कोर्स लाने के साथ अन्य प्रयास हो रहे हैं। वह काउंसिल की ओर से कांस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित संस्कृत भूषण सम्मान समारोह में भविष्य की योजनाओं की जानकारी दे रहे थे।

समारोह में संस्कृत भाषा के उत्थान को लेकर कार्य करने वाले शिक्षाविदों व संस्कृत भाषा में शपथ लेने वाले जनप्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर एलबीएस संस्कृत विवि के कुलपति मुरली मनोहर पाठक, डीयू के प्राक्टर सौरभ कुमार व संस्कृत विभागाध्यक्ष भारतेंदु पाण्डेय और लखनऊ के प्रो. अशोक दुबे के साथ ही जनप्रतिनिधियों में केंद्रीय मंत्री श्रीपाद येस्सो नाईक, अरुण गोविल, प्रताप चंद्र सारंगी, डा. महेश शर्मा समेत विभिन्न प्रदेशों के विधायक व महापौर को सम्मानित किया गया। आयोजन में महामंडलेश्वर स्वामी शिव प्रेमानंद महाराज, महामंडलेश्वर यतीन्द्रानंद गिरि महाराज व स्वामी योगी सत्यम के साथ काउंसिल के बोर्ड आफ ट्रस्टी के अध्यक्ष व पूर्व केंद्रीय मंत्री अजय भट्ट तथा काउंसिल के संरक्षक व पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने देवभाषा संस्कृत के प्रसार पर विशेष जोर दिया।

## हिन्दुस्तान

Delhi Edition : 29.01.2026

## संस्कृत जागरुकता अभियान शुरू होगा

नई दिल्ली। संस्कृत भाषा के शिक्षण और प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए 'रामायण रिसर्च काउंसिल' सनातन परिवार को जागरूक करने के उद्देश्य से राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू करेगी। काउंसिल के ट्रस्टी डॉ. स्वामी भरत दास महाराज ने बताया कि इस अभियान से देश की आईआईटी समेत अन्य प्रमुख संस्थानों को जोड़ा जाएगा।

**दैनिक भास्कर** Date : 07.02.2025

# संस्कृत को लेकर कार्य करने वाले देश के शिक्षाविद, सांसद, विधायक और मेयर का सम्मान

**भास्कर समाचार सेवा**

नई दिल्ली। रामायण रिसर्च काउंसिल संस्कृत भाषा के प्रसार के लिए विगत दो वर्षों से सतत कार्य कर रही है। इसी क्रम में काउंसिल नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में संस्कृत भूषण सम्मान का आयोजन किया गया। इस आयोजन के दौरान संस्कृत के उत्थान को लेकर कार्य करने वाले देश के शिक्षाविदों, सांसदों और विधायकों को सम्मानित किया गया। इस विषय की जानकारी काउंसिल के ट्रस्टी तथा सेवानिवृत्त आईएएस देव दत्त शर्मा ने दी। उन्होंने कहा कि इस आयोजन से काउंसिल के बैनर तले संस्कृत के प्रति कार्य करने वाले लोगों को प्रोत्साहन मिलेगा। इस अवसर पर संस्कृत भाषा में न्यूज वेबसाइट रामायण वार्ता डॉट कॉम का शुभारंभ किया गया। यह सम्मान संतों के हाथों प्रदान किया गया, जिनमें महामंडलेश्वर स्वामी शिव प्रेमानंद जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी यतीन्द्रानंद गिरि जी महाराज, स्वामी योगी सत्यम जी महाराज तथा काउंसिल के सदस्य महामंडलेश्वर स्वामी चित्प्रकाशानंद गिरि जी महाराज मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि संस्कृत कोई सामान्य भाषा नहीं है, विश्व के भाषाओं की जननी है, इसलिए वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय संत स्वामी योगी सत्य जी महाराज के माध्यम से 142 देशों में इस सम्मान समारोह के आयोजन को दिखाने की तैयारी है। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा में रामायण वार्ता पाक्षिक पत्रिका को डिजिटल माध्यम से हर सनातनी परिवार तक पहुंचाने के लिए बिहार आईआईटी पहले ही हरसंभव सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दे चुकी है, लेकिन वह देश के 11 आईआईटी को इससे जोड़ने के लिए स्वयं संपर्क करेंगे।

**INDIA TV**

# Ramayan Research Council holds Sanskrit Bhushan Samman event, launches new portal in Sanskrit

Ramayan Research Council trustee and retired IAS Dev Dutt Sharma said the Council is also going to publish a booklet titled Learn the Devbhasha Sanskrit for training in Sanskrit language.

Ramayan Research Council holds Sanskrit Bhushan Samman event. IMAGE SOURCE : SCREENGRAB

Edited By: Manmath Nayak X @manmathnayak2
Published: August 06, 2025 22:37 IST, Updated: August 06, 2025 22:57 IST

**New Delhi:** The Ramayan Research Council has been working continuously for the last two years for the promotion of Sanskrit language in the country. In this regard, the Council organised Sanskrit Bhushan Samman on Wednesday at the Constitution Club in New Delhi.

During this event, academicians, MPs and MLAs of the country working for the upliftment of Sanskrit were honoured.

### Event will encourage people working towards Sanskrit

Council trustee and retired IAS Dev Dutt Sharma gave information about this subject and said that this event will encourage people working towards Sanskrit under the banner of the Council.

He informed that on this occasion, news website ramayanvarta.com in Sanskrit language was also launched and this honour was given by the hands of saints which include Mahamandaleshwar Swami Shiv Premanand Ji Maharaj, Mahamandaleshwar Swami Yatindranand Giri Ji Maharaj, Swami Yogi Satyam Ji Maharaj and Council member Mahamandaleshwar Swami Chitprakashanand Giri Ji Maharaj.

### Sanskrit is not an ordinary language

Sharma said that Sanskrit is not an ordinary language, it is the mother of languages of the world, so he is also preparing to show the organisation of this honour ceremony in 142 countries through the internationally popular saint Swami Yogi Satya Ji Maharaj.

He said that Bihar IIT has already assured to provide all possible support to reach out the Ramayan Varta fortnightly magazine in Sanskrit language to every Sanatani family through digital medium, and he will himself contact 11 IITs of the country to connect them with it and will request them for technical support.

### Council to publish booklet 'Learn Devbhasha Sanskrit'

Sharma informed that the Council has been publishing the fortnightly magazine Ramayan Varta in Sanskrit language for a very long time and added that the Council is also going to publish a booklet titled Learn the Devbhasha Sanskrit for training in Sanskrit language which will make it easier to read and write Sanskrit.

Sharma further informed that in India, most of the families are Sanatanis, but despite this, the kind of indifference towards Sanatan's original Devbhasha Sanskrit is increasing, this is a matter of concern on which the Council is working.

**पत्र नहीं मित्र**
**देशबन्धु**

Date: 08.02.2025

**कार्यक्रम** संस्कृत के उत्थान के लिए काउंसिल ने दिया संस्कृत भूषण सम्मान

# संस्कृत का आज के समय में प्रसार करना जरूरी : अजय भट्ट

नई दिल्ली, 7 अगस्त (देशबन्धु)। रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्तवावधान में नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में संस्कृत भूषण सम्मान प्रदान किया। यह सम्मान संस्कृत के उत्थान को लेकर कार्य करने वाले कई शिक्षाविदों के साथ संस्कृत भाषा में शपथ लेने वाले सांसदों, विधायकों तथा मेयर को प्रदान किया गया। यह सम्मान संतों के हाथों प्रदान किया गया जिनमें महामंडलेश्वर स्वामी शिव प्रेमानंद जी महाराज,महामंडलेश्वर स्वामी यतीन्द्रानंद गिरि जी महाराज तथा स्वामी योगी सत्यम जी महाराज प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इस सम्मान समारोह का कई देशों में डिजिटल रूप। लाइव प्रसारण भी हुआ। इस अवसर पर संस्कृत भाषा में समाचार एवं संस्कृति पर आधारित वेबसाइट रामायण वार्ता डॉट कॉम का भी शुभारंभ हुआ। काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने कहा कि काउंसिल संस्कृत के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए 60 दिनों के एक कोर्स का मोड्यूल भी लाने जा रही है। इस अवसर पर काउंसिल के बोर्ड ऑफ ट्रस्टी के अध्यक्ष तथा उत्तराखण्ड से सांसद अजय भट्ट ने कहा कि देवभाषा संस्कृत को आज के समय में प्रसार करना बेहद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि संस्कृत कई भाषाओं की जननी है, लेकिन इसका प्रयोग अधिक से अधिक करें, इसके लिए शिक्षण एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जिसे लेकर काउंसिल बड़ा अभियान शुरू करने जा रही है। वहीं काउंसिल के मुख्य संरक्षक तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने कहा कि काउंसिल पिछले दो वर्षों से पाक्षिक पत्रिका रामायण वार्ता का प्रकाशन कर रही है, यह अपने आप में प्रशंसनीय नहीं है, क्योंकि एक तरफ जहां संस्कृत के पाठकों की कमी है, अधिक विज्ञापन नहीं है, वहां काउंसिल लगातार संस्कृत को लेकर कार्य कर रही है, यह बड़ा साहसिक कार्य है।

**■ संतों के हाथों प्रदान किया गया सम्मान**

काउंसिल के सदस्य डॉ. अभिषेक वर्मा ने कहा कि रामायण वार्ता के इस अभियान को वह कई देशों में ले जाने की योजना बना चुके हैं और काउंसिल के इस पहल को साकार होते देखना चाहते हैं। वहीं काउंसिल के ट्रस्टी तथा सेवानिवृत्त आईएएस देव दत्त शर्मा ने कहा कि वह देश के कई आईआईटीज को इस कार्य से जोड़कर हर सनातनी के हाथ में यह अभियान कैसे पहुंचे, इस पर प्रयत्न कर रहे हैं। इस अवसर पर काउंसिल के ट्रस्टी तथा सेवानिवृत्त आईएएस देव दत्त शर्मा, डॉ. अभिषेक वर्मा, पिताम्बर मिश्र, रौशन सिंह, केवल कपूर, देव रत्न शर्मा, यूपी सरकार के पूर्व मंत्री रविकांत गर्ग, राजेश सिंह, राजीव सिंह, ऋतेश अग्रवाल, अम्बर अग्रवाल, अर्चना सिंघल, शिवम सिंह, कुमार स्मृति, संजीव सिंह समेत काउंसिल के दर्जनों सदस्य उपस्थित रहे।

पंजाब केसरी
Date : 07.02.2025

# संस्कृत के उत्थान के लिए काउंसिल ने दिया संस्कृत भूषण सम्मान

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में संस्कृत भूषण सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सम्मान समारोह में महामंडलेश्वर स्वामी शिव प्रेमानंद जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी यतीन्द्रानंद गिरि जी महाराज और स्वामी योगी सत्यम जी महाराज विशेष रूप से मौजूद रहे। यह सम्मान उन शिक्षाविदों, सांसदों, विधायकों और मेयरों को प्रदान किया गया, जिनमें लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति मुरली मनोहर पाठक, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रॉक्टर सौरभ कुमार, संस्कृत विभागाध्यक्ष भारतेंदु पाण्डेय, केंद्रीय मंत्री श्रीपद येस्सो नाईक, सांसद अरुण गोविल, प्रताप चंद्र सारंगी, डॉ. महेश शर्मा, दिल्ली के संस्कृति मंत्री कपिल मिश्रा, विधायक संजय गोयल, विधायक नीलम कृष्ण पहलवान, विधायक करनैल सिंह और सतना के महापौर योगेश ताम्रकार प्रमुख रूप से शामिल रहे।

इंडिया टीवी .in

# रामायण रिसर्च काउंसिल ने किया संस्कृत भूषण सम्मान कार्यक्रम का आयोजन, नया पोर्टल हुआ लॉन्च

रामायण रिसर्च काउंसिल के ट्रस्टी और रिटायर्ड आईएएस देवदत्त शर्मा ने बताया कि परिषद संस्कृत भाषा में प्रशिक्षण के लिए 'देवभाषा संस्कृत सीखें' नामक पुस्तिका भी प्रकाशित करने जा रही है।

Edited By: Malaika Imam @MalaikaImam1
Published : Aug 06, 2025 11:36 pm IST, Updated : Aug 06, 2025 11:36 pm IST

रामायण रिसर्च काउंसिल ने संस्कृत भूषण सम्मान कार्यक्रम का किया आयोजन

नई दिल्ली: देश में संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के लिए पिछले दो साल से लगातार काम कर रही रामायण रिसर्च काउंसिल ने बुधवार को नई दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में संस्कृत भूषण सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में देश के उन शिक्षाविदों, सांसदों और विधायकों को सम्मानित किया गया जो संस्कृत के उत्थान के लिए काम कर रहे हैं।

**संस्कृत के लिए काम करने वालों को मिलेगा प्रोत्साहन**

काउंसिल के ट्रस्टी और रिटायर्ड आईएएस देव दत्त शर्मा ने बताया कि यह कार्यक्रम उन लोगों को प्रोत्साहित करेगा जो काउंसिल के बैनर तले संस्कृत के लिए काम कर रहे हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि इस मौके पर संस्कृत भाषा में ramayanvarta.com नाम की एक न्यूज़ वेबसाइट भी लॉन्च की गई। सम्मान देने वालों में महामंडलेश्वर स्वामी शिव प्रेमानंद जी महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी यतींद्रानंद गिरी जी महाराज, स्वामी योगी सत्यम जी महाराज और काउंसिल के सदस्य महामंडलेश्वर स्वामी चितप्रकाशानंद गिरी जी महाराज जैसे संत शामिल थे।

**"संस्कृत एक असाधारण भाषा है"**

शर्मा ने कहा कि संस्कृत एक असाधारण भाषा है, यह दुनिया की सभी भाषाओं की जननी है। इसलिए, वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय संत स्वामी योगी सत्यम जी महाराज के माध्यम से इस सम्मान समारोह को 142 देशों में दिखाने की तैयारी भी कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि बिहार आईआईटी ने पहले ही संस्कृत भाषा में 'रामायण वार्ता' पाक्षिक पत्रिका को डिजिटल माध्यम से हर सनातनी परिवार तक पहुंचाने के लिए हर संभव मदद देने का आश्वासन दिया है। वे खुद भी देश के 11 आईआईटी से संपर्क कर उन्हें इस पहल से जोड़ेंगे और उनसे तकनीकी मदद का अनुरोध करेंगे।

**'देवभाषा संस्कृत सीखें' नामक पुस्तिका होगी प्रकाशित**

शर्मा ने बताया कि काउंसिल लंबे समय से संस्कृत भाषा में 'रामायण वार्ता' पाक्षिक पत्रिका प्रकाशित कर रही है। इसके अलावा, काउंसिल संस्कृत भाषा में प्रशिक्षण के लिए 'देवभाषा संस्कृत सीखें' नामक एक पुस्तिका भी प्रकाशित करने जा रही है, जिससे संस्कृत पढ़ना और लिखना आसान हो जाएगा।

शर्मा ने आगे कहा कि भारत में ज्यादातर परिवार सनातनी हैं, लेकिन फिर भी सनातन की मूल देवभाषा संस्कृत के प्रति बढ़ती उदासीनता चिंता का विषय है और काउंसिल इसी पर काम कर रही है।

**नईदुनिया** Date: 12.02.2026

# रामायण वार्ता परियोजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने सांसद

**नईदुनिया न्यूज,अंबिकापुर:** रामायण रिसर्च काउंसिल की महत्वाकांक्षी परियोजना रामायण वार्ता को नई दिशा मिली है। सरगुजा सांसद चिंतामणि महाराज को परियोजना का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उनके नेतृत्व में देशभर में भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार को और गति दी जाएगी। रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा संचालित रामायण वार्ता परियोजना के अंतर्गत संस्कृत भाषा के शिक्षण-प्रशिक्षण का कार्य किया जाता है। परिषद का उद्देश्य नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से जोड़ना और संस्कृत के संरक्षण को मजबूत करना है। राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद सांसद चिंतामणि महाराज ने कहा कि

सांसद को सम्मान पत्र देते

वर्तमान समय में संस्कृत भाषा के संरक्षण की अत्यंत आवश्यकता है। परिषद द्वारा संस्कृत शिक्षण को आमजन तक पहुंचाने के लिए डिजिटल माध्यमों का भी विस्तार किया जाएगा। आगामी 60 दिनों में देशभर में प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाएंगे तथा भाषा की महत्ता पर जनजागरूकता अभियान चलाया जाएगा।उन्होंने बताया कि रामायण वार्ता संस्था तकनीक के माध्यम से संस्कृत को घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास कर रही है। मोबाइल और आनलाइन प्लेटफार्म के जरिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया जाएगा। विद्यार्थियों को संस्कृति से जोड़ने पर विशेष जोर रहेगा।सांसद ने केंद्र सरकार, छत्तीसगढ़ सरकार सहित अन्य राज्य सरकारों से भी सनातन संस्कृति और संस्कृत भाषा के संरक्षण में सहयोग की अपील की है।

**नवोदय टाइम्स** Date: 30.01.2026

# संस्कृत के प्रसार के लिए अभियान चलाएंगे डॉ. स्वामी भरत दास महाराज

गुड़गांव, 29 जनवरी (ब्यूरो): 'रामायण रिसर्च काउंसिल' के ट्रस्टी डॉ. स्वामी भरत दास महाराज ने कहा है कि वह संस्कृत भाषा के शिक्षण-प्रशिक्षण के प्रति सनातन परिवार को जागरूक करेंगे और इसके लिए राष्ट्रव्यापी अभियान चलाएंगे।उदासीन संगत ऋषि आश्रम रानोपाली, अयोध्या के श्रीमहंत डॉ. भरत दास ने बताया कि काउंसिल के तत्त्वावधान में संस्कृत भाषा को लेकर 60 दिनों का एक कोर्स तैयार किया गया है, जिस पर 60 वीडियोज़ भी प्रोड्यूस किया जाएंगे।

*डॉ. स्वामी भरत दास।*

वीडियोज़ और टेक्स्ट बुक के माध्यम से देश के विभिन्न संस्थानों में शिविर लगाए जाएंगे और देव भाषा की महत्ता और उसे बचाने की आवश्यकता पर जानकारी प्रदान की जाएगी। रामायण रिसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने कि संस्था प्रति वर्ष संस्कृत भाषा के उत्थान को लेकर कार्य करने वाले महानुभावों को सम्मान देती है और पिछले तीन वर्षों से संस्कृत भाषा में 'रामायण वार्ता' पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन कर रही है, जिसके मुख्य संपादक डॉ. स्वामी भरत दास जी महाराज हैं। डॉ. भरत दास ने कहा कि पटना आईआईटी 'रामायण वार्ता' की नोडल संस्था है जो तकनीक के माध्यम से देवभाषा को हर सनातन परिवार तक पहुंचाने के लिए सतत प्रयत्न कर रही है। देश के अन्य आईआईटीज को इस कार्य में जोड़ा जाएगा और संस्कृत के उत्थान के लिए वह काउंसिल के तत्त्वावधान में बड़ा अभियान चलाएंगे।

**अमर उजाला** Delhi Edition : 29.01.2026

# शैक्षणिक संस्थानों में लगेंगे संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

**नई दिल्ली।** संस्कृत भाषा के संरक्षण, शिक्षण और प्रसार के लिए शैक्षणिक संस्थानों में संस्कृत प्रशिक्षण शिविर लगेंगे। इसके लिए देशभर में जल्द ही जन जागरण अभियान शुरू होगा। आईआईटी संस्थानों को भी इससे जोड़ा जाएगा। रामायण रिसर्च काउंसिल के ट्रस्टी व अयोध्या उदासीन संगत ऋषि आश्रम के महंत डॉ स्वामी भरत दास ने इसकी जानकारी दी है। इससे लिए 60 दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स तैयार है। 60 शैक्षिक वीडियो बनाए जाएंगे। पटना आईआईटी रामायण वार्ता की नोडल संस्था बनी है। संवाद

**दैनिक भास्कर** Delhi Edition : 29.01.2026

# संस्कृत के प्रसार के लिए "रामायण रिसर्च काउंसिल" के तत्वावधान में देशभर में अभियान चलाएंगे अयोध्या के डॉ. स्वामी भरत दास जी महाराज

**भास्कर समाचार सेवा**

नई दिल्ली। 'रामायण रिसर्च काउंसिल' के ट्रस्टी डॉ. स्वामी भरत दास जी महाराज ने कहा है कि वह संस्कृत भाषा के शिक्षण-प्रशिक्षण के प्रति सनातन परिवार को जागरूक करेंगे और इसके लिए राष्ट्रव्यापी अभियान चलाएंगे। उदासीन संगत ऋषि आश्रम (रानोपाली, अयोध्या) के श्रीमहंत डॉ. भरत दास जी ने बताया कि काउंसिल के तत्त्वावधान में संस्कृत भाषा को लेकर 60 दिनों का एक कोर्स तैयार किया गया है, जिस पर 60 वीडियोज भी प्रोड्यूस किया जाएंगे। उन्होंने बताया कि वीडियोज और टेक्स्ट बुक के माध्यम से देश के विभिन्न संस्थानों में शिविर लगाए जाएंगे और देव भाषा की महत्ता और उसे बचाने की आवश्यकता पर जानकारी प्रदान की जाएगी। रामायण रिसर्च काउंसिल के महासचिव कुमार सुशांत ने कि संस्था प्रति वर्ष संस्कृत भाषा के उत्थान को लेकर कार्य करने वाले महानुभावों को सम्मान देती है और पिछले तीन वर्षों से संस्कृत भाषा में 'रामायण वार्ता' पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन कर रही है, जिसके मुख्य संपादक डॉ. स्वामी भरत दास जी महाराज हैं।

डॉ. भरत दास ने कहा कि पटना आईआईटी "रामायण वार्ता' की नोडल संस्था है जो तकनीक के माध्यम से देवभाषा को हर सनातन परिवार तक पहुंचाने के लिए सतत प्रयत्न कर रही है। उन्होंने बताया कि देश के अन्य आईआईटीज को इस कार्य में जोड़ा जाएगा और संस्कृत के उत्थान के लिए वह काउंसिल के तत्त्वावधान में बड़ा अभियान चलाएंगे। उन्होंने संस्कृत के विद्वानों से इस अभियान में जुड़ने और श्रमदान की अपील भी की। डॉ. दास जी ने देवभाषा और सनातन संस्कृति के प्रसार लिए केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश की योगी सरकार की प्रशंसा भी की।

# कुछ गणमान्यों के सोशल मीडिया वॉल्स से

**Chintamani Maharaj - चिंतामणि महाराज** · Follow
7 August 2025 ·

संस्कृत भाषा के सेवकों को समर्पित एक गौरवपूर्ण आयोजन
"संस्कृत भूषण सम्मान समारोह" 🌾🚩

रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में एनसीसी हॉल, कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में आयोजित संस्कृत भूषण सम्मान समारोह में मुख्य रूप से सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर सम्माननीय श्री पीताम्बर जी सहित संस्था के सभी सदस्यों को इस भव्य आयोजन हेतु हृदय से बधाई एवं शुभकामनाएँ।

संस्कृति, संस्कार और सम्मान का यह संगम प्रेरणास्पद है।

**Ajay Bhatt** · Follow
7 August 2025 ·

विगत दिवस एनेक्सी हाल कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ़ इंडिया नई दिल्ली में रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वाधान में आयोजित संस्कृत भूषण सम्मान कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। सुंदर कार्यक्रम के लिए आयोजको को शुभकामनाएं प्रेषित की

**Mahendra Singh Solanki** · Follow
8 August 2025 ·

कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा आयोजित भव्य समारोह में "संस्कृत भूषण सम्मान" से अलंकृत होना मेरे लिए अत्यंत सौभाग्य और गर्व का विषय है।

यह सम्मान केवल मेरा व्यक्तिगत गौरव नहीं, बल्कि हमारी प्राचीन संस्कृत भाषा और उसकी गौरवशाली परंपरा के प्रति एक समर्पण है।

संसद में संस्कृत भाषा में शपथ लेना मेरे जीवन का परम सौभाग्य रहा, और इस पहल को राष्ट्रीय मंच पर मान्यता मिलना मेरी संस्कृति और मातृभूमि के प्रति निष्ठा का प्रतीक है।

इस पुनीत अवसर पर संस्था के सम्माननीय सचिव श्री पीताम्बर मिश्रा जी सहित समस्त आयोजकों को इस उत्कृष्ट आयोजन हेतु हृदय से बधाई एवं शुभकामनाएँ।

मैं यह सम्मान समस्त देशवासियों को समर्पित करता हूँ तथा संकल्प लेता हूँ कि भारतीय संस्कृति, भाषा और विरासत के संरक्षण एवं प्रसार हेतु सदैव संलग्न रहूँगा।

**Guru khushwant saheb** · Follow
6 August 2025 ·

रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में नई दिल्ली में आयोजित सम्मान समारोह में भारतीय संस्कृति, संस्कृत भाषा और रामायण परंपरा के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए प्रयासों के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा मुझे "#संस्कृत_भूषण_सम्मान" से अलंकृत किया गया।

यह सम्मान केवल मेरा नहीं, अपितु उन सभी व्यक्तियों और संस्थाओं का है जो निरंतर हमारी गौरवशाली परंपराओं के संवर्धन में कार्यरत हैं। संस्कृत भाषा, जो हमारी सभ्यता की आत्मा है, उसके संरक्षण और संवर्धन के लिए मैं सदैव समर्पित हूं।

**Sunita Duggal M.P. Sirsa** · Follow
8 August 2025 ·

वर्ष 2019 में मेरे द्वारा #लोकसभा में संस्कृत भाषा में #शपथ ग्रहण करने के लिए रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा #संस्कृत_भूषण_सम्मान से सम्मानित करने के लिए हार्दिक #आभार।

**Yogesh Kumar Tamrakar** · Follow
8 August 2025 ·

नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में आज़ रामायण रिसर्च काउंसिल द्वारा आयोजित भव्य समारोह में मुझे "संस्कृत भूषण सम्मान" से अलंकृत किया गया।

यह सम्मान मुझे संस्कृत भाषा के संवर्धन और प्रचार-प्रसार में योगदान, तथा महापौर पद की शपथ संस्कृत में ग्रहण करने के सन्दर्भ में प्रदान किया गया। यह सम्मान केवल मेरा नहीं, बल्कि हमारी प्राचीन संस्कृत भाषा और मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा का प्रतीक है। यह सम्मान मैं अपने सतना शहर को समर्पित करता हूँ।
#महापौर_सतना

## काउंसिल के विषय में अति-संक्षिप्त परिचय :

- "रामायण रिसर्च काउंसिल", नई दिल्ली में ट्रस्ट के रूप में एक पंजीकृत संस्था है। जिसका गठन वर्ष 2020 में हुआ है। संस्था आयकर विभाग अंतर्गत 12A एवं 80G संबद्ध है। काउन्सलिंग का उद्देश्य हमारे देश के सांस्कृतिक मूल्यों का संवर्धन करना है।

- काउंसिल का उद्देश्य देश में सांस्कृतिक मूल्यों का संवर्धन करना है। काउंसिल देश की एकमात्र ऐसी संस्था है जो प्रभु श्रीरामजी की जन्मभूमि अयोध्या और मां सीताजी के प्राकट्य-क्षेत्र सीतामढ़ी (बिहार) दोनों पर कार्य करती है। काउंसिल ने अयोध्या में श्रीराम-मंदिर संघर्ष पर वृहदशोधपरक साहित्य-स्वरूप ग्रंथ (1250 पृष्ठों का 'श्रीरामलला- मन से मंदिर तक') को तैयार किया। यह ग्रंथ लोकप्रिय प्रधानमंत्री आ. श्री नरेंद्र भाई मोदी जी के विशेष मार्गदर्शन (31 अगस्त 2020 के दिन) के बाद ही पूर्ण हो सका।

- वहीं, काउंसिल मां सीताजी के प्राकट्य-क्षेत्र सीतामढ़ी को शक्ति-क्षेत्र के रूप में विकसित करने के लिए वर्ष 2018 से ही सीतामढ़ी में कार्य करती रही है। काउंसिल के प्रयत्नों को देखते हुए 19 मई 2025 को बिहार सरकार अंतर्गत बिहार राज्य धार्मिक न्यास पर्षद ने सीतामढ़ी में प्रकट-स्थान पुनौरा-धाम से तीन-किलोमीटर दूर 833 वर्ष अति-प्राचीन श्रीराम-जानकी स्थान को विकसित करने हेतु काउंसिल को इस मठ के साथ लगभग 12 एकड़ भूमि भी आवंटित कर दी। 10 जून 2025 को नई दिल्ली स्थित कॉन्सिट्यूशन क्लब में काउंसिल के तत्त्वावधान में प्रेस वार्ता आयोजित कर देश के कई पूज्य संतों ने इसके लिए केंद्र सरकार और बिहार सरकार के प्रति विशेष आभार प्रकट भी किया। काउंसिल सीतामढ़ी में अति प्राचीन इस स्थान पर 51 शक्तिपीठों से मिट्टी एवं ज्योत लाकर एक 'अखण्ड-शक्ति-ज्योत' के साथ गर्भगृह में एक 'चतुर्भुजा महालक्ष्मी' के स्वरूप को भी स्थापित करेगी। सीतामढ़ी में काउंसिल का उद्देश्य केवल एक मंदिर का ही निर्माण करना नहीं है, बल्कि 'विश्व-नारी केंद्र' की स्थापना करना है जो समस्त नारी जगत के लिए गौरव का प्रतीक हो।

- काउंसिल, राष्ट्र के सांस्कृतिक-उत्कर्ष के संवर्धन हेतु साहित्य-सृजन पर विशेष कार्य करती रही है। 'सनातन संग भारत,' 'श्रीभगवती सीता- महाशक्ति साधना' समेत कई ज्ञानवर्द्धक-पुस्तकों के प्रकाशन के अलावा काउंसिल ने वर्ष 2025 में प्रयागराज में आयोजित ऐतिहासिक महाकुंभ पर अब तक सबसे वृहद व आकर्षक कॉफीटेबल-बुक शीर्षक-'महाकुंभ का महामंथन' को हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में तैयार किया है। वहीं, देवभाषा संस्कृत को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु संस्कृत भाषा के शिक्षण-प्रशिक्षण संबंधी 60 दिनों का एक कोर्स मोड्यूल बनाकर कई कार्यक्रमों के संचालन के साथ संस्कृत भाषा में पाक्षिक पत्रिका 'रामायण वार्ता' का पिछले ढाई वर्षों से प्रकाशन भी काउंसिल करती रही है। इतना ही नहीं, संस्कृत भाषा में समाचार एवं संस्कृति पर आधारित एक वेबसाइट RamayanVarta.com को क्रियान्वित भी करती रही है। हम संस्कृत भाषा के उत्थान के लिए कार्य करने वाले महानुभावों को हर वर्ष 'संस्कृत भूषण सम्मान' भी प्रदान करते रहे हैं।

- वैदेहीनंदन पंडित वेदांत जी महाराज (12 वर्षीय) द्वारा बालमन को सांस्कृतिक विचारों से जोड़ने वाले पद्य 'वेदांत पुष्प' को तैयार किया गया है। आपने ही बच्चों में संस्कृति, संस्कार, अनुशासन व नैतिक संवर्धन हेतु काउंसिल के लिए पुस्तक 'मानस ज्ञनांश' तथा 'रामलला की किशोरी सीता' को भी तैयार किया है। मानस-ज्ञानांश पुस्तक के ही आधार पर काउंसिल की एक टीम 'रामायण मंच' प्रकल्प के माध्यम से बच्चों को संस्कारित करती रही है।

**Web:** www.ramayanvarta.com | **Email:** ramayanvarta@gmail.com

**Mother Org. Web:** www.ramayanresearchcouncil.com | **Email:** ramayanresearchcouncil@gmail.com

**Contact No** - 9891169934, 9650384895